ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

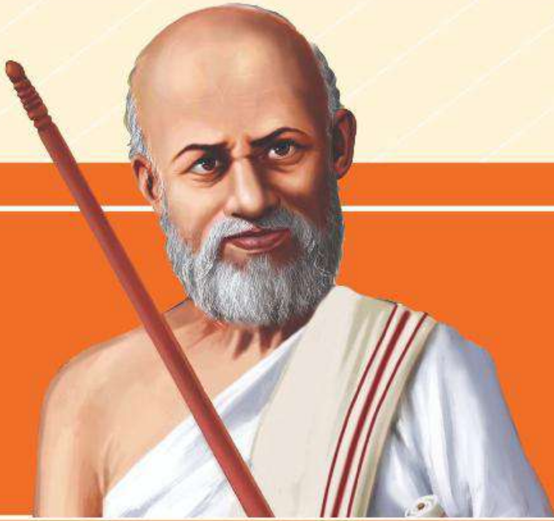

पू. आगमोद्धारकश्री का संक्षिप्त जीवन-दर्शन

1. जन्म - वि.सं. 1931 आषाढ (श्रावण) विदी 30 (अमावस्या)
2. जन्म स्थल - कपडवंज
3. पिता - मगनभाई
4. माता - जमना बेन
5. दीक्षा वर्ष - वि.सं. 1947
6. दीक्षा तिथि - महासुद 5
7. दीक्षा गुरु - प.पू. मुनिश्री झवेरसागरजी म.सा.
8. दीक्षा स्थल - लींबडी (सौराष्ट्र)
9. बड़ दीक्षा तिथि - जेठ सुदी 7
10. बड़ी दीक्षा दाता - पू.पं. श्री हेतविजयजी म.सा.
11. बड़ी दीक्षा स्थल - पुरबाई जैन धर्मशाला, लींबडी
12. गणिपद वर्ष - वि.सं. 1960
13. गणिपद तिथि - जे.सु. 10
14. गणिपद स्थल - अहमदाबाद
15. पंन्यास पद वर्ष - वि.सं. 1960
16. पंन्यास पद तिथि - आषाढ़ सुदी 3
17. पंन्यास पद स्थल - अहमदाबाद
18. पदवी दाता - पू.पं. श्री नेमिविजयजी म.सा.
19. आचार्य पद वर्ष - वि.सं. 1974
20. आचार्य पद तिथि - वैशाख सुदी 10
21. आचार्य पद स्थल - सुरत
22. आचार्य पद दाता - पू.आ. श्री कमलसूरि म.सा.
23. अर्द्ध पद्मासन स्थिति - वि.सं. 2006 वैशाख सुदी 5 दोपहर 3.00 बजे से वैशाख (जेठ) विदी 5 दोपहर 4.32 बजे तक (सुरत)
24. कालधर्म - वि.सं. 2006 वैशाख (जेठ) विदी 5 दोपहर 4.32 बजे (सुरत)

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

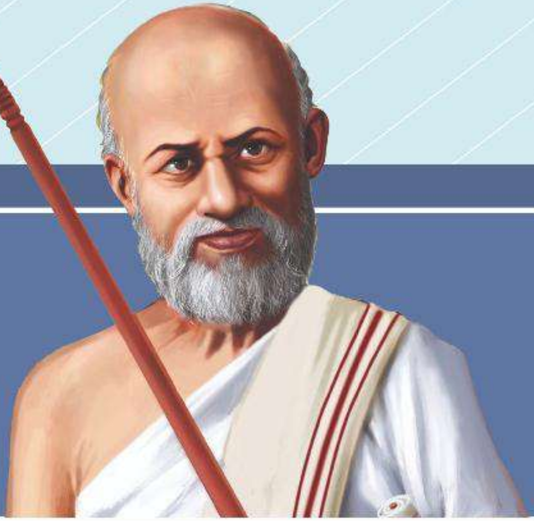

पू. आगमोद्धारकश्री के उपदेश से स्थापित संस्थाएं

- सं. 1964 सेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धारक फंड, सुरत
- सं. 1970 श्री आगमोदय समिति
- सं. 1975 श्री राजनगर जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक धार्मिक परीक्षा संस्था अहमदाबाद
- सं. 1975 श्री जैनानंद-पुस्तकालय, सुरत
- सं. 1977 सेठ ऋषभदेवजी, केशरीमलजी पेढ़ी, रतलाम
- सं. 1980 उपाश्रय एवं ज्ञानमंदिर, कलकत्ता
- सं. 1980 श्री हिंदी साहित्य प्रचारक-फंड-अजीमगंज
- सं. 1981 जैन बोर्डिंग, रतलाम
- सं. 1983 श्री जैनामृत समिति, उदयपुर
- सं. 1984 श्री नवपद आराधक समाज
- सं. 1985 श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता, जामनगर
- सं. 1985 श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन बोर्डिंग, जामनगर
- सं. 1987 श्री जैन तत्त्व बोध पाठशाला, सुरत
- सं. 1987 श्री रत्नसागरजी जैन विद्याशाला कायमी फंड, सुरत
- सं. 1987 श्री नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धारक फंड, सुरत
- सं. 1988 श्री सिद्धचक्र साहित्य-प्रचारक-समिति
- सं. 1992 श्री लक्ष्मी आश्रम तथा श्री जैनानंद-ज्ञान मंदिर, जामनगर
- सं. 1993 श्री देवबाग, जामनगर
- सं. 1993 श्री आयंबिल खाता एवं जैन भोजनशाला, जामनगर
- सं. 1994 श्री वर्धमान जैन शीलोत्कीर्ण आगम मंदिर, पालीताणा
- सं. 1995 श्री श्रमण-संघ-पुस्तक संग्रह, पालीताणा
- सं. 1998 श्री जैन धर्म प्रभाव समाज, पालीताणा
- सं. 1998 श्री सिद्धचक्र-गणधर मंदिर, पालीताणा
- सं. 2000 श्री शांतिनाथजी जैन पेढ़ी, गोधरा
- सं. 2002 श्री आगमोद्धारक संस्था, सुरत
- सं. 2004 श्री वर्धमान जैन ताम्रपत्रागम मंदिर, सुरत

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

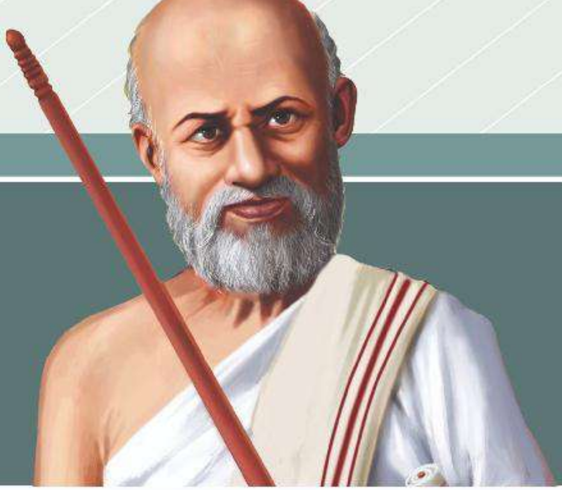

श्रुतोपासना साहित्य सर्जन

- 187 प्रतों और पुस्तकों द्वारा कुल 8, 24, 457 श्लोक प्रमाण आगम तथा अन्य शास्त्रों का संपादन तथा मुद्रण कार्य.
- 83 ग्रंथों की मननीय-प्रस्तावना का लेखन कार्य.
- आगम-साहित्य का 52 विषयों में वर्गीकरण.
- संस्कृत-प्राकृत भाषा में 66, 562 श्लोक-प्रमाण शास्त्रीय ग्रंथों की रचना.
- इसके अलावा गुजराती साहित्य भी बड़ी संख्या में उपलब्ध है तथा स्वयं लेखन से अति प्रसिद्ध 'सिद्धचक्र' मासिक का अनवरत प्रकाशन.
- विविध संघों में 30 पुस्तकालय-ज्ञान भण्डारों की स्थापना.

जीवन गगन के तेजस्वी सितारे :

- वि.सं. 1950 पाली (राज.) में ठाणांग-सूत्र आधारित प्रवचन.
- वि.सं. 1952, 2004 में शास्त्र और परंपरा के आधार पर श्रीसंघ को शुद्ध मान्यतानुसार संवत्सरी-महापर्व की आराधना करवाई.
- वि.सं. 1958 पाटन में 'दुष्काल राहत फंड' करवाया.
- वि.सं. 1974 सुरत श्रीसंघ की एकता.
- वि.सं. 1977 सैलाना नरेश-प्रतिबोधन तथा अमारि प्रवर्तन.
- वि.सं. 1979 सेमलिया-पंचेड के ठाकुर को प्रतिबोध.
- वि.सं. 1982 पोरवाड-संघ की सादडी (राज.) नगर में समाधान.
- वि.सं. 1990 मुनि सम्मेलन के सूत्रधार.
- वि.सं. 1990 पंजाब में निराश्रितों के लिए राहत फंड.

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

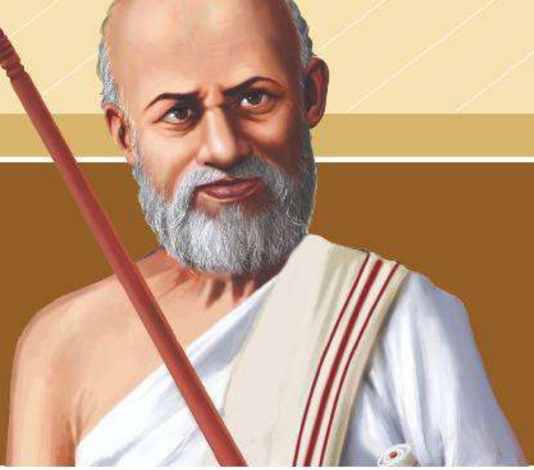

विविध 25 संस्थाओं की स्थापना करवाई. तीर्थरक्षक और तीर्थोद्धारक

- वि.सं. 1964 में समेतशिखरजी तीर्थ पर अंग्रेजों के द्वारा बनने वाले बंगले का कार्य रुकवाया और समेतशिखरजी तीर्थ को खरीदवाकर श्वेताम्बर श्रीसंघ की मालिकी का करवाया।
- वि.सं. 1965 में अंतरिक्षजी तीर्थ का केस दिगंबरों के सामने जीता।
- वि.सं. 1971 में भोपावर-मक्षीजी-मांडवगढ (म.प्र.) तीर्थ का जीर्णोद्धार एवं स्टेट के साथ समाधान करवाया।
- वि.सं. 1983 में केशरियाजी तीर्थ में ध्वजादंड की एवं तारंगाजी तीर्थ में प्रभु की चरण पादुका की प्रतिष्ठा करवाई।
- वि.सं. 1985 में शत्रुंजय महातीर्थ की रक्षा हेतु लाखों रुपयों का फंड करवाया।
- श्री चारुप तीर्थ के जिनालय की सीमा में रखे हुए शिवलिंग को अन्यत्र रखवाया।
- संयम जीवन के मंदिर पर समाधिमृत्यु की ध्वजा।
- वि.सं. 2006 वैशाख सुदी 5 को दोपहर 3 बजे से जेठ विदी 5 दोपहर 4.32 तक (15 दिन तक एक साथ)
- सुरत में लीमड़ा उपाश्रय में अंतिम अवस्था में अर्द्ध पद्मासन मुद्रा में रहकर समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए।

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

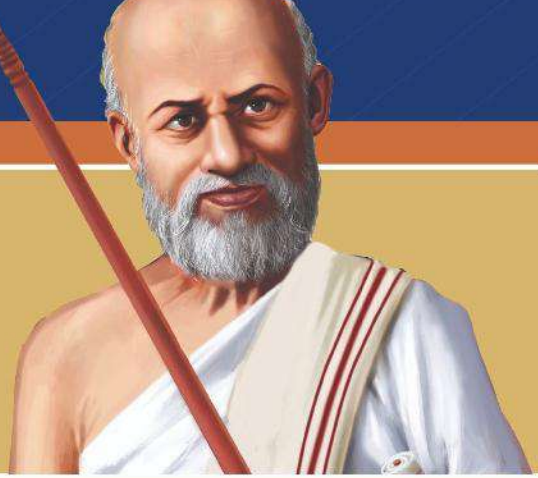

"

प्रसिद्ध नगरी कपड़गंज (गुजरात) की धन्यधरा पर विक्रम संवत 1931 में अषाढ कृष्ण (राजस्थानी श्रावण वदी) अमावस्या की रात्रि में 3.37 पर तेजस्वी-ओजस्वी-यशस्वी बालक के रुप में हुआ । जिसका नाम रखा गया हेमचंद्र ।

"

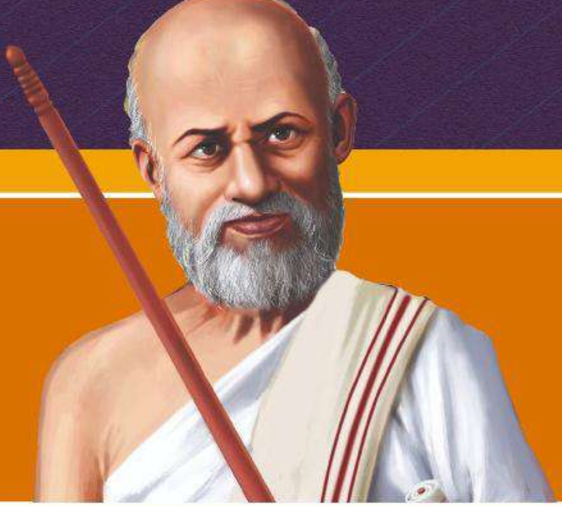

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

"

जिनके गर्भ में आने से पूर्व... माता यमुना बहन ने स्वप्न में आकाश में से उतरते मदमस्त-मनोहर-आकृतियुक्त हृष्ट-पुष्ट सुन्दर 'वृषभ' को देखा... जो एक शासन प्रभावक महापुरुष के आगमन का संकेत दे रहा था...

02

"

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

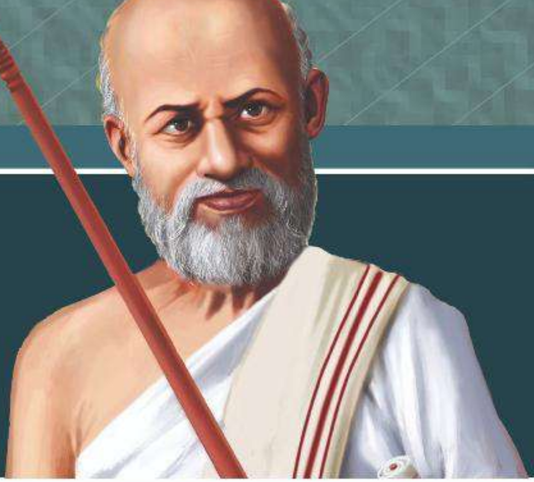

जिनके जन्म के एक दिन पूर्व माता को सामूहिक स्नात्रपूजा पढाने का भाव हुआ और जब स्नात्रपूजा पढाई गई तब जिनमंदिर में कुल मिलाकर 45 पुण्यात्माओं की उपस्थिति रही । जिसमें 11 श्रावक, 12 श्राविका, 10 बालक, 6 बालिका, 4 साध्वीजी एवं 2 साधु भगवंत मौजूद थे, जो क्रमशः 11 अंग, 12 उपांग, 10 पयन्ना, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र एवं नन्दीसूत्र-अनुयोगद्वार सूत्रस्वरुप 45 आगम के प्रतीक हो, ऐसे प्रतीत हो रहे थे ।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM 9424898657 art

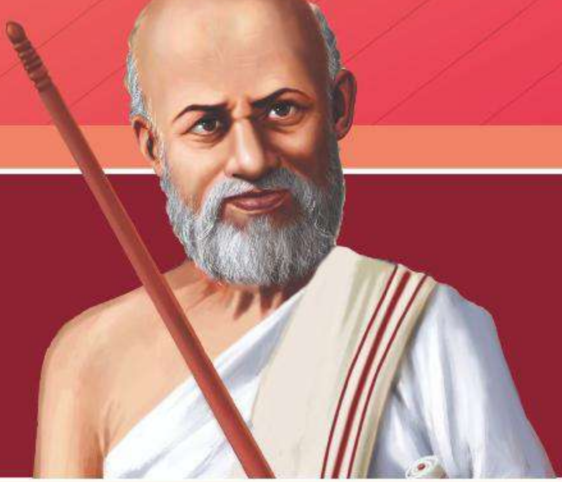

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

"

काशी के विद्वान पंडित ने इस बालक की कुंडली देखकर कहा था कि मैंने अपने जीवनकाल के 70 वर्ष में पहलीबार ऐसी कुंडली देखी है...
भगवद्गीता... की पंक्ति... 'यदा यदा ही धर्मस्य' जब-जब धर्म की हानि होगी, तो प्रभु का अवतरण होगा... इस बालक के जीवन में भी ये पंक्तियां सही साबित हो रही है।

"

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM 9424898657 art

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

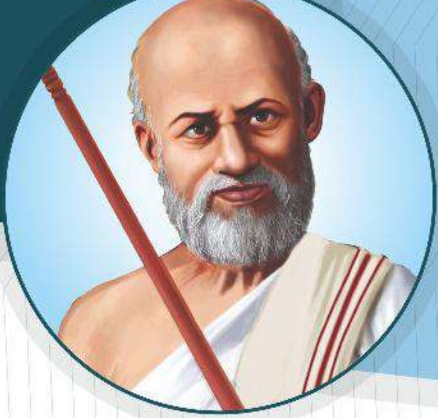

जिनके गर्भ में आते ही माता को उत्तम दोहद उत्पन्न हुए, जैसे कि,

- मैं देवर्धिगणि क्षमाश्रमण का चरित्र पढ़ूं...
- मैं आगम-ग्रंथों का प्रतिलेखन, संमार्जन तथा वासक्षेप पूजन करूं...
- पौषध सहित ज्ञानपंचमी, मेरुतेरस, वीर निर्वाण कल्याणक, शाश्वती ओली, चौमासी छठ्ठ की पौषधपूर्वक आराधना करूं...
- प्रभु-प्रतिष्ठा कराऊं... नंदीसूत्र का श्रवण करूं...

माता के उपरोक्त सभी दोहद परिपूर्ण हुए... अषाढ वदी अमावस्या को भी प्रात: बारह व्रत की पूजा एवं पुण्यप्रकाश का स्तवन श्रवण किया। माता के जीवन में आराधनाओं की मंगल-हारमालाओं का सृजन हुआ।

AYODHYAPURAM art
9424898657
9424898657
www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

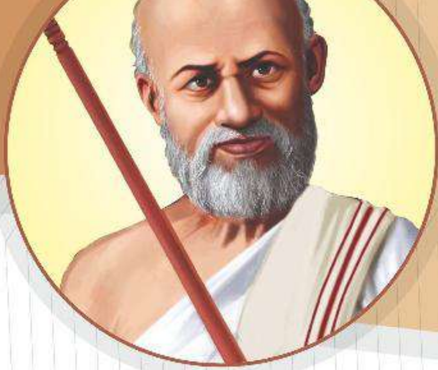

जिनको बचपन से ही जीवन की सफलता के लिए पिता... ने पाँच मंत्र प्रदान किए थे...

1. हमेशा, हित-मीत-प्रीतकारी वचन बोलना।
2. अभिमानरुपी हाथी से सावधान रहना।
3. ईर्ष्या-निंदा का त्याग करना।
4. नवकार मंत्र का जाप करना।
5. साधु-संत की वैयावच्च करना।

AYODHYAPURAM art
9424898657
9424898657
www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

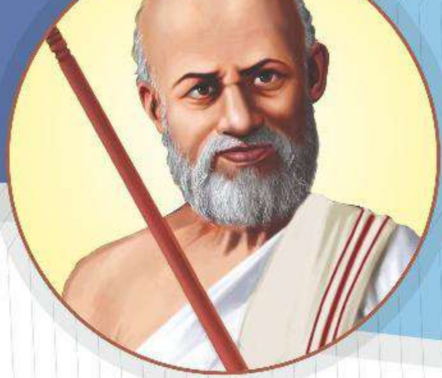

बाल्यवस्था में गले पर हुआ फोडा फूटने पर भी... जिसने अपूर्व सहनशीलता, धीरता एवं बुजुर्गों के लिए सद्भावना का परिचय दिया एवं खेल में बच्चों के द्वारा स्ट्रीट लाईट टूटने पर स्वयं नहीं भागकर साहसिकता की झलक भी दिखलाई।

AYODHYAPURAM art 9424898657

9424898657
www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

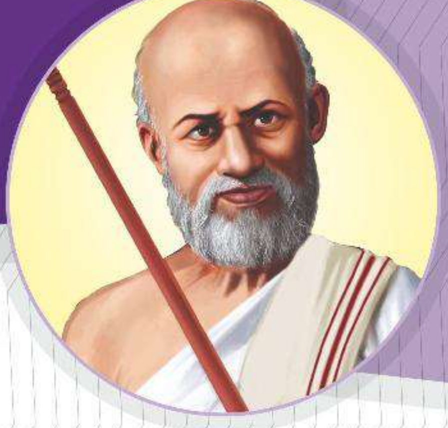

व्यवहारिक एवं धार्मिक शिक्षण प्राप्त करते हुए जिन्हें वादी विजेता पूज्य गुरुदेवश्री झवेरसागरजी म.सा. का परिचय केवल उनकी प्रतिकृति (Photo) द्वारा हुआ और पूर्वभव का कोई गहरा ऋणानुबंध हो... इस तरह स्नेहभीने बनकर मन ही मन उन्हें शिर-छत्र के रुप में स्वीकार भी कर लिया। किसी भी समस्या का समाधान वे उस प्रतिृकति के समक्ष प्राप्त कर लेते।

AYODHYAPURAM art
9424898657
9424898657
www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

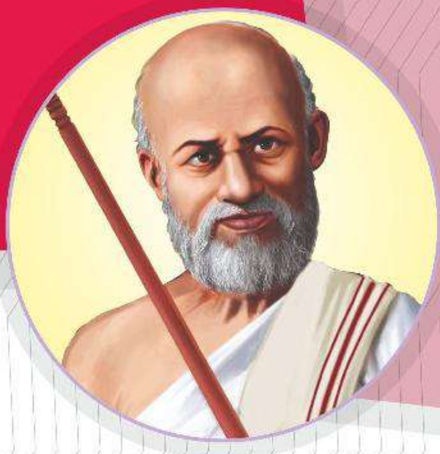

जिन्होंने अपने बड़े भाई की दीक्षा के शुभावसर पर ब्रह्मचर्य व्रत के पच्चकखाण किए एवं दीक्षा हेतु 3 विगई का त्याग किया।

AYODHYAPURAM art 9424898657

9424898657
www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

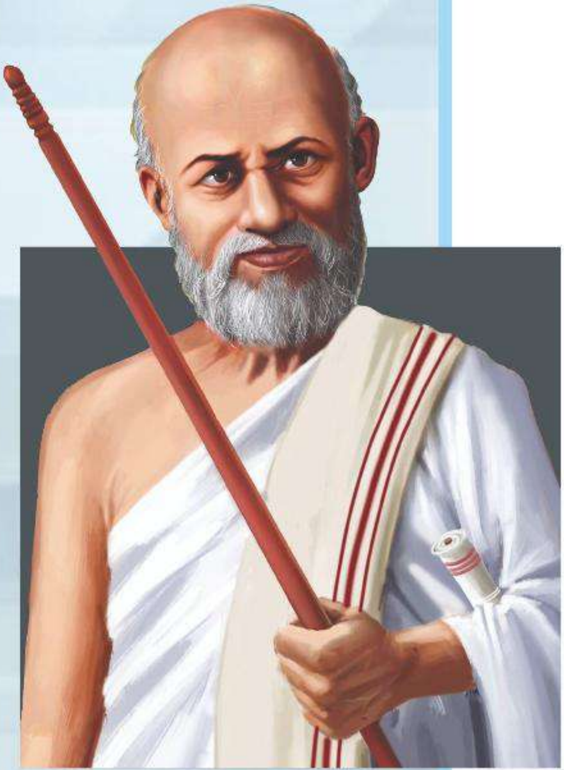

नाबालिग उम्र में संयम की अनुमति मांगने पर भी जिन्हें माता के अथाह मोह के कारण विवाह करना पड़ा, पर उस बंधन को भी अपने पिता की मदद से तोड़कर विरति की वरमाला पहनने में जो कामयाब रहे।

AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

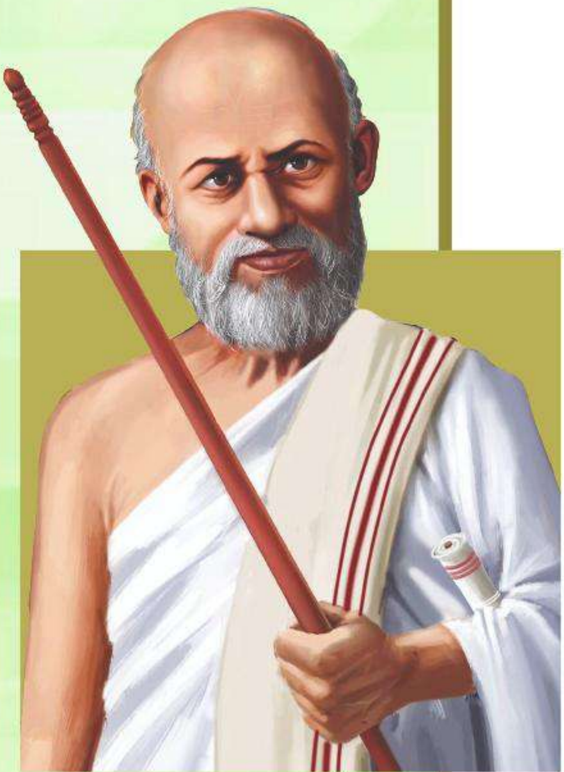

वादी विजेता श्री झवेरसागरजी म.सा. द्वारा माणिभद्रजी का स्मरण करने पर... जिनका दीक्षा-मुहूर्त भी तपागच्छाधिष्ठायक... निर्मलसम्यकत्वी एकावतारी श्री माणिभद्र यक्षराज द्वारा लिखित में प्रदत्त था। विक्रम संवत 1947 महासुदी पंचमी (वंसतपंचमी) के दिन जिनके जीवन में... संयम का स्वर्णिम सूर्योदय हुआ...।

AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिन्हें अपने गुरुदेवश्री ने मृत्यु के अंतिम समय में यह आशीर्वाद दिए कि शासन प्रभावक नहीं... श्रुतोपासक... श्रुतसेवक... बनना एवं आगमों का ध्यान रखना यह आशीर्वाद ही उनके जीवन का प्रेरक-बल बन गया।

AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

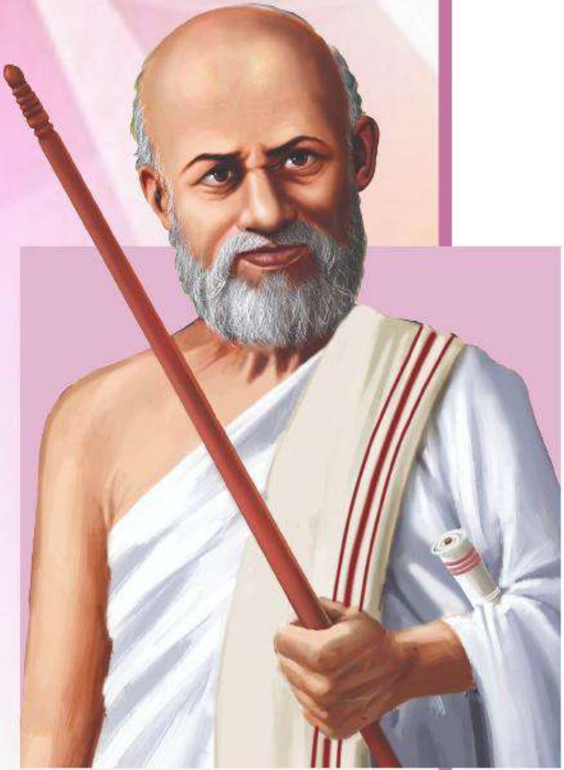

दीक्षा के मात्र नौ महिने में ही जिन्हें अपने तारणहार वात्सल्य... भंडार पूज्य गुरुदेवश्री झवेरसागरजी म.सा. का वियोग सहना पड़ा। प्रारंभ में तो बेहद निराश हो गए... परंतु एक रात्रि में गुरुदेव स्वयं पधारे और कहने लगे आप तो पूर्वभव के श्रुतधर हो... स्वयं ही पढ सकते हो... जो आगम पढना हो उसे ऊँचे स्थान पर रखकर वंदन करके... वायणा संदिसाहुं आदि आदेश लेकर पढाई शुरु करना परंतु आगम, जोग किए बिना मत पढना।

AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth

जिन्होंने अपने गुरु-विरह में प्रथम दिन से ही निर्दोष संयम-जीवन के दृढ़ संकल्प किए उसी अनुसार गौचरी-चर्या करते हुए आगम ज्ञानाभ्यास बढाते रहे... एक हाथ में घडा एवं एक हाथ में तर्पणी डंडा लेकर गौचरी-पानी व्होरने जाते पानी कभी ठारते नहीं (ठंडा नहीं करते), पुरिमुड्ढ पच्चकखाण पारते एवं प्रासुक आहार-पानी वापरकर पुन: अभ्यास में लीन हो जाते।

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

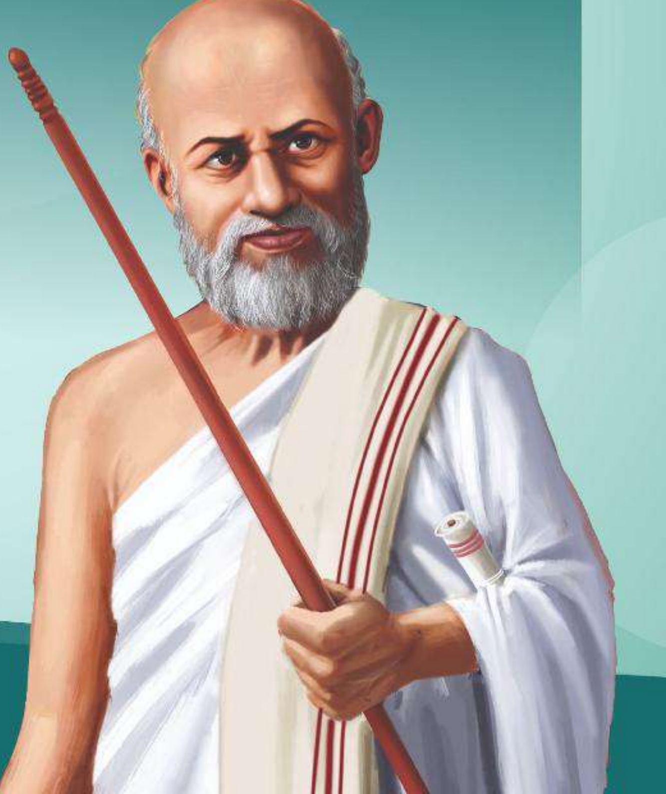

9424898657 www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth
AYODHYAPURAM art
9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

व्याकरण की पुस्तक तलाश करने में जिनको 180 दिन लगे, मगर मात्र 90 दिन में ही उसे कंठस्थ कर लिया।

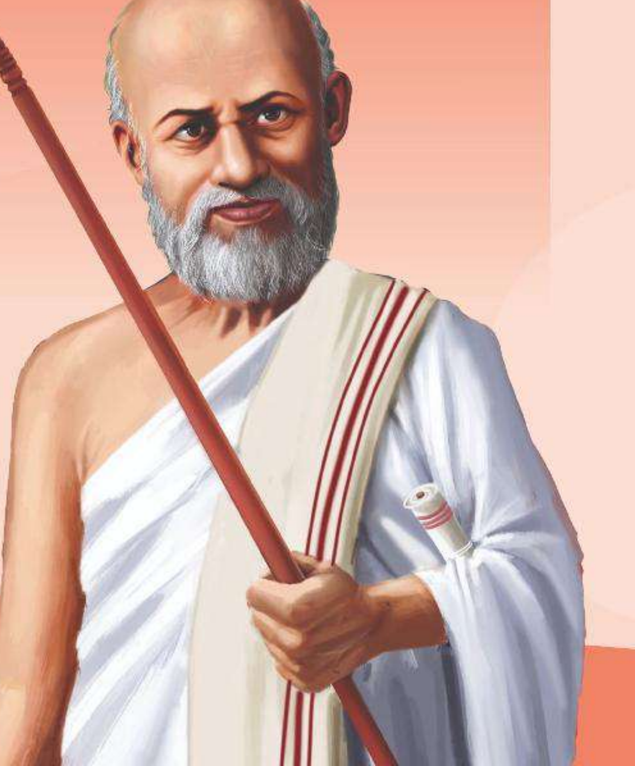

15

पूर्वाचारों के विनय एवं बहुमान से मानो उनकी दिव्यशक्ति को अपने भीतर अवतरित ना की हो... इस तरह से एक-एक ग्रंथ का जिन्होंने योगोद्वहनपूर्वक शानदार श्रुताभ्यास किया।

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

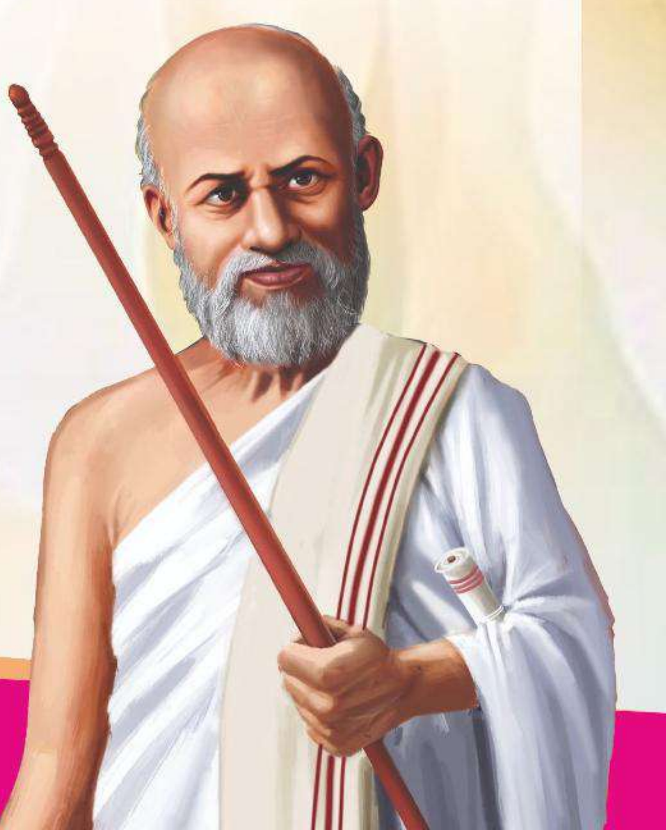

9424898657 www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth
AYODHYAPURAM art
9424898657

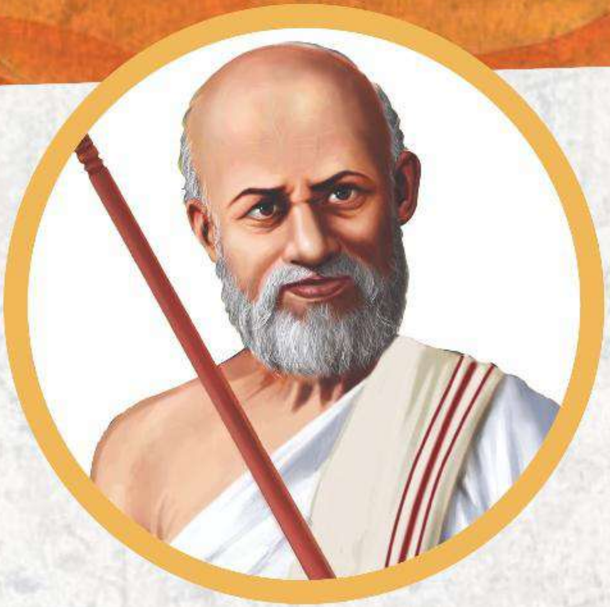

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

पूर्वभव की साधना से जिनके जीवन में प्रबल मेधा, तीक्ष्ण तार्किकता एवं तलस्पर्शी चिंतन आदि गुण जबर्दस्त रुप उद्घाटित हुए।

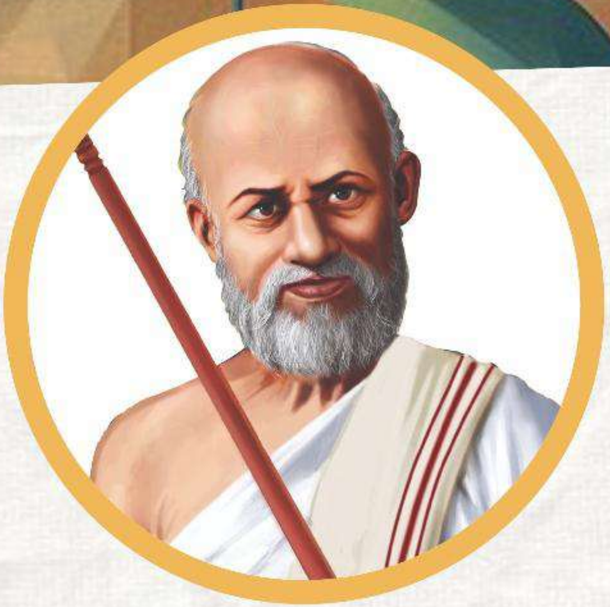

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

'कद वामन पर मेध महान' यह उक्ति जिन के जीवन में अक्षरश: चरितार्थ हुई। वि.सं. 1950 में जब उनका चातुर्मास राजस्थान के पाली में था। चातुर्मास प्रवेश के दिन ही श्री दशवैकालिकसूत्र के प्रथम श्लोक के प्रथम चरण पर डेढ घण्टे तक प्रवचन चला जिसे सुनकर मूर्ति पूजा-विरोधीओं ने प्रवचन सुनकर चुप्पी साध ली।

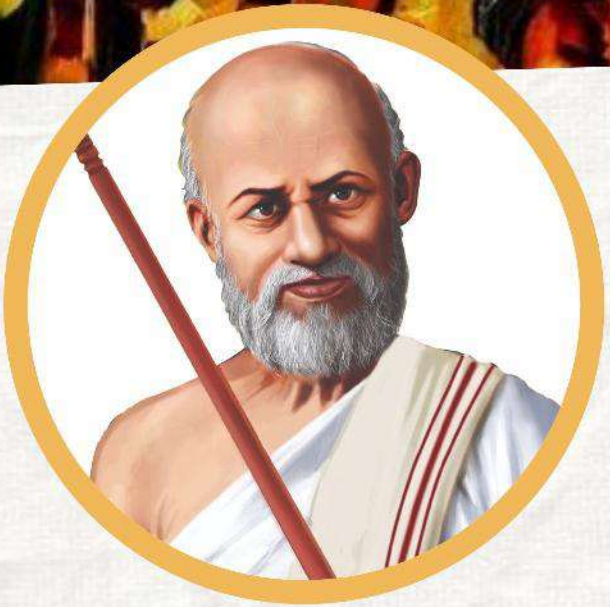

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जैसे वीर प्रभु ने कर्म क्षय के लिये अनार्यभूमि में विहार किया वैसे - जिन्होंने प्रभु पूजा विरोधी क्षेत्र राजस्थान के थलीगांव आदि प्रदेशों की और विहार किया और वहां जाकर बेनमून शासन प्रभावना की ।

9424898657 www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth
AYODHYAPURAM art
9424898657

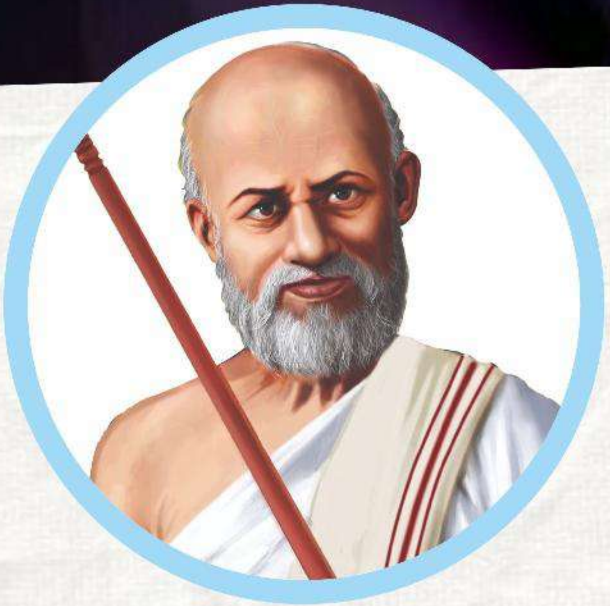

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिन्होंने मात्र चार साल के लघु दीक्षा पर्याय में गुजरात के पेटलावद नगर में तिथि संबंधी चर्चा-परामर्श एवं परापूर्व के संबंध द्वारा पर्वतिथि की अमूल्य आराधना का मर्म बताकर अनेक पूज्यों तथा राजनगर (अहमदाबाद) के धर्मनिष्ठ-श्रावकों के साथ संवत्सरी की आराधना की एवं समग्र भारतवर्ष में पर्वतिथि की अखंडितता को 'मान्य' करवाया।

9424898657 www.bandhubeldi.com
Ayodhyapuram Tirth
AYODHYAPURAM art
9424898657

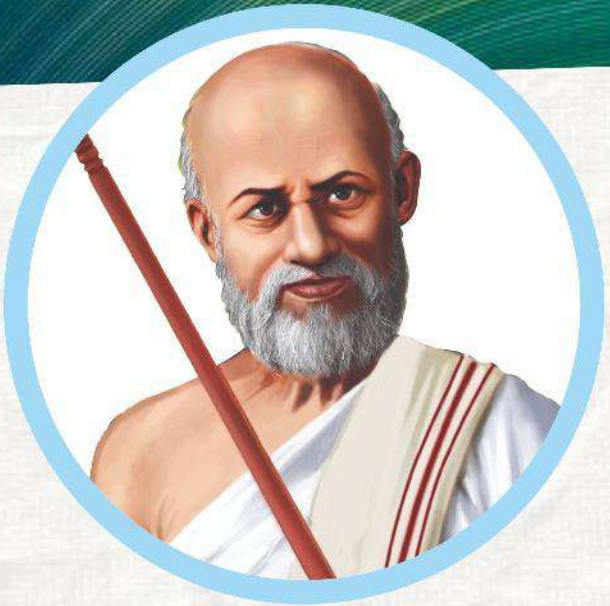

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिनकी पावनकारी निश्रा में पेटलाद नगर में संवत्सरी-महापर्व की शास्त्रोक्त आराधना हुई तब... वहां के सुश्रावक श्री मनसुखभाई भगुभाई ने प्रतिक्रमण पश्चात सकल श्रीसंघ के आराधकों को सोने की वेढ (अंगूठी) की प्रभावना की।

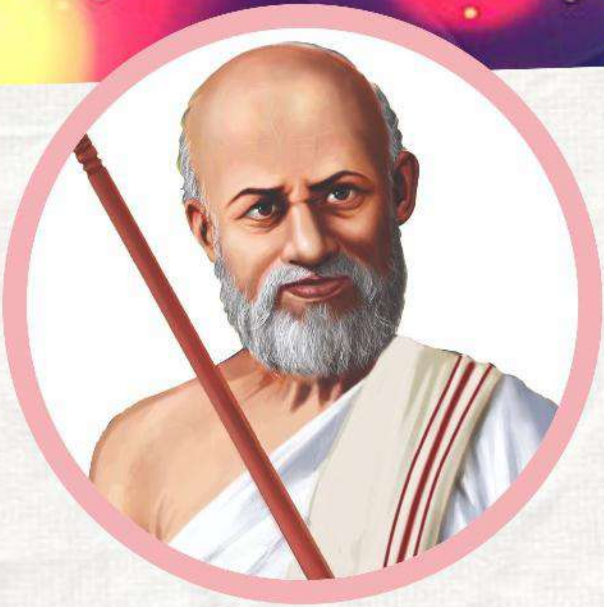

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिनके द्वारा बताए गए/समझाए गए सिद्धांत, साहित्य एवं सामाचारी जैन जगत में शिलालेख के समान माने जाते हैं, ये उद्‌गार पंडित नगराजजी के मुख से निकले थे।

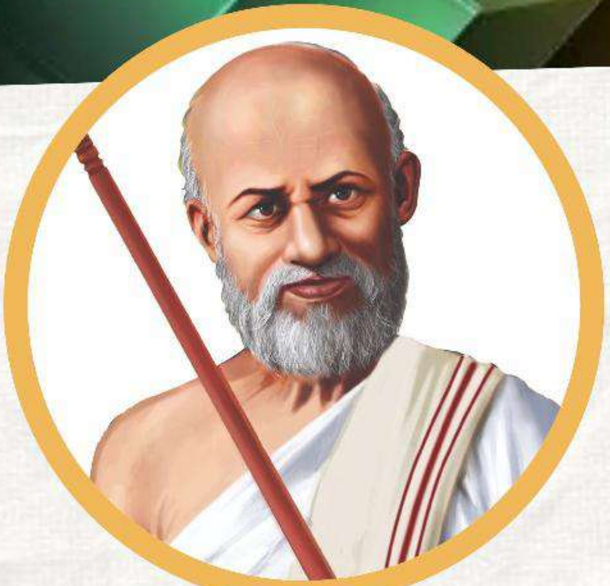

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

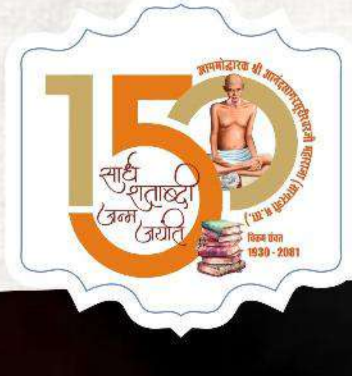

जिनकी नम्रता एवं नि:स्पृहता आदर्शपूर्ण थी। अनेकानेक ग्रंथों के संपादन के बावजूद और आचार्यपद आरुढ होने के बाद भी वे ग्रंथों की प्रस्तावना में अपने-आपका परिचय केवल 'श्रमण संघ-सेवक' के रुप में देना ही पसंद करते थे... उपाधि, विशेषणों, पदविओं के अतिरिक्त लिबास से वे स्वयं को वंचित ही रखते थे।

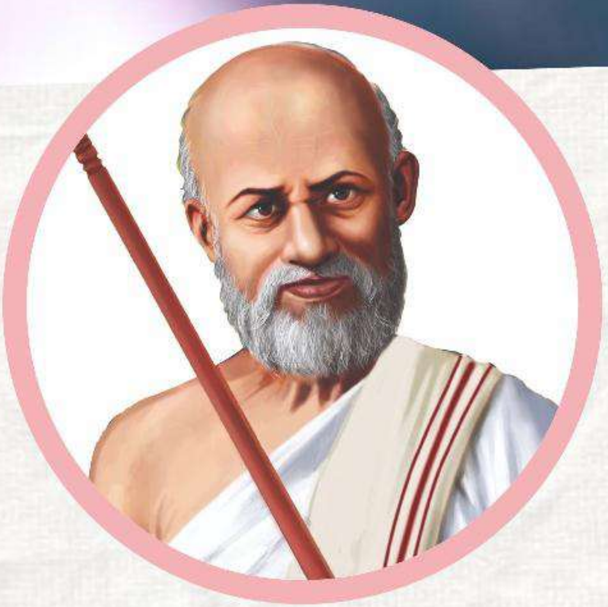

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिनके हृदय में प्रतिपल किसी भी समुदाय के कोई भी श्रमण भगवंत की वैयावच्च का लाभ लेने की भावना बनी रहती... यही कारण था कि तीन श्रमण भगवंतो की आजीवन-सेवा का लाभ पाने में वे सफल रहे ।

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

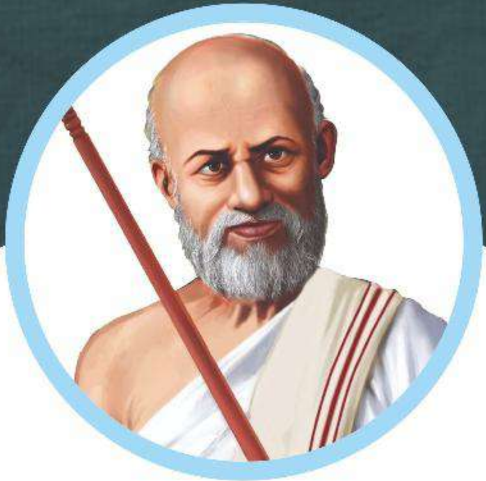

एक ओर... जिनका शास्त्र संशोधन तो बेजोड-बेमिसाल था ही... प्रभु मिलन भी अद्भूत था। किसी भी तीर्थ स्थान पर जाते तो प्रभु की ध्यानस्थ मुद्रा का ध्यान कर अंतर में प्रगट हुए भावों को लयबद्ध कर पद्यकृति के रुप गूंथ लेते... जो संस्कृत-प्राकृत, गुजराती चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति के रुप में आज भी उपलब्ध हैं।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

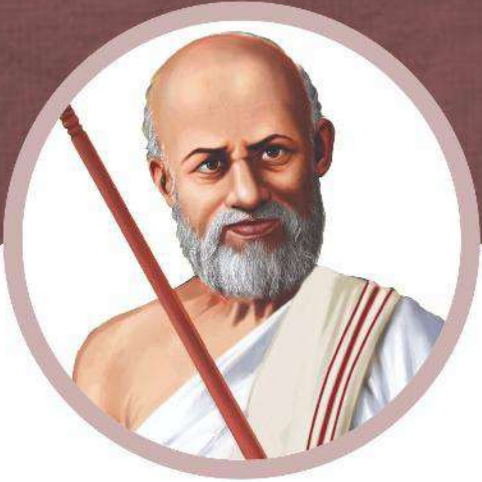

भयंकर अकाल के समय में अहमदाबाद चातुर्मास दौरान जिन्होंने लगातार 15 दिन तक जिनवाणी की मूसलाधार बारिश कर जन समुदाय में ऐसा माहौल बनाया कि थोड़े ही समय में ही व्यवस्थापक महाजनों की झोली विपुल धन राशि से छलक उठी । कई विधवा बहनें... अन्य बहनों के सौभाग्य को उजड़ने से बचाने के लिए... दान के लिए तैयार हुई । इस तरह पूरे वर्ष तक साधर्मिकभक्ति, अनुकंपा और जीवदया में एकत्रित किए दान से जिनशासन की जयपताका दसों दिशाओं में लहराती रही।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर
सूरीश्वरजी महाराजा

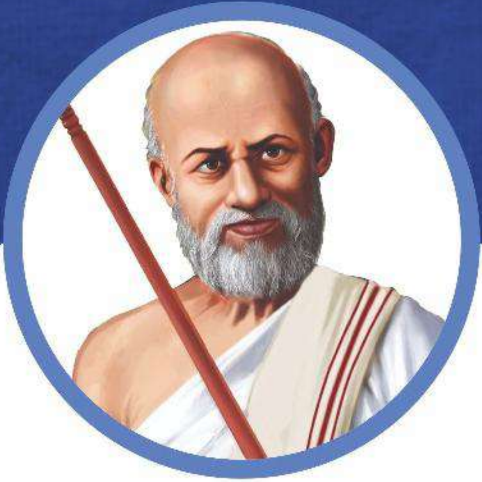

जिन्होंने शासन-सेवा के साथ षट्दर्शन के अभ्यास में भी कोई कमी नहीं रखी। 'जिन दर्शन' का ज्ञान तो वे ले ही रहे थे... काशी के विद्वान पंडितों के पास... षट्दर्शन का अभ्यास भी बड़ी गहराई से कर रहे थे।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

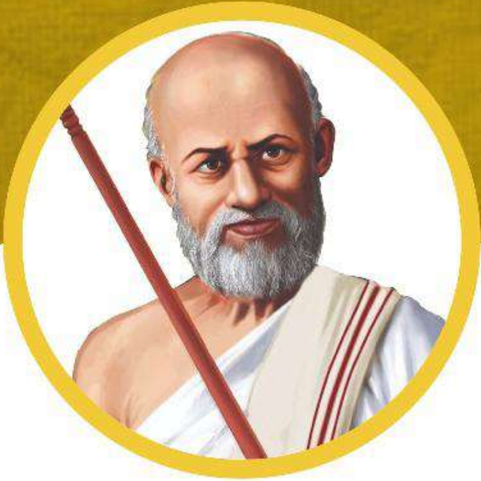

गुजरात के पेथापुर की प्रांतीय परिषद् में जिन्होंने आर्यदेश की जाहोजलाली और संस्कृति की पुनः प्राप्ति के लिए -

'जागो... काम पर लगो... और भौतिकवाद से भागो...'

यह त्रिपदी देकर वहां के कलह-क्लेश-विवाद को शांत किया ।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं...
पू. सागरजी म.

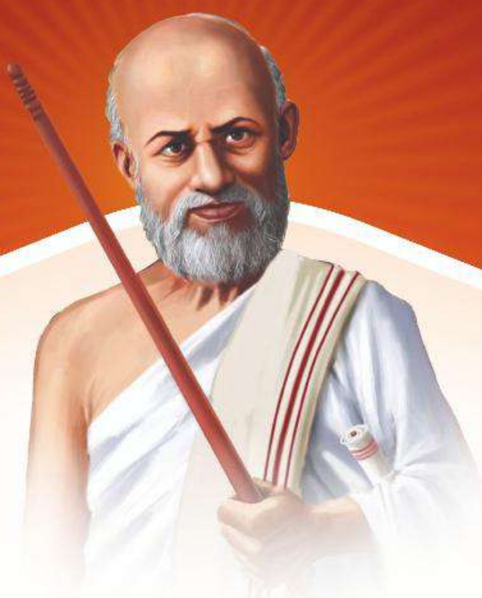

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

जिनकी प्रतिभा, प्रभावकता एवं पवित्रता से प्रभावित होकर अनेक मुमुक्षु दीक्षा लेने के लिए लालायित हो जाते, परंतु जो उग्र-परीक्षा द्वारा यह जानते कि व्यक्ति-राग से तो यह मेरे पास नहीं आया है ना ? जो मोह-गर्भित सियार होते वे... उनकी सिंह-गर्जना सुनकर भाग जाते और ज्ञानगर्भित संयम-रागी जीव ही साधु-धर्म में प्रवेश पा सकते ।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं...
पू. सागरजी म.

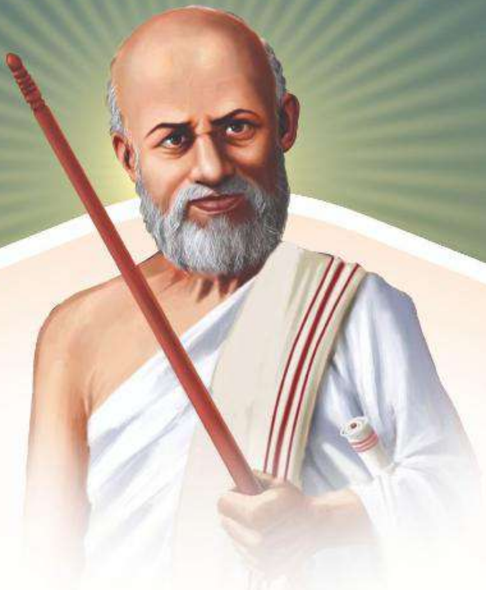

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर
सूरीश्वरजी महाराजा

सच्चा धन और सच्ची संपत्ति जैन साहित्य के संस्कृत, गुजराती, प्राकृत एवं अन्य भाषा के ग्रंथ ही हैं, ऐसा समझाकर जिन्होंने सबसे प्रथम, ग्रंथ मुद्रित करवाने हेतु 'श्रुत-प्रकाशन संस्था' की स्थापना का क्रांतिकारी उपदेश भी दिया।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं...
पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

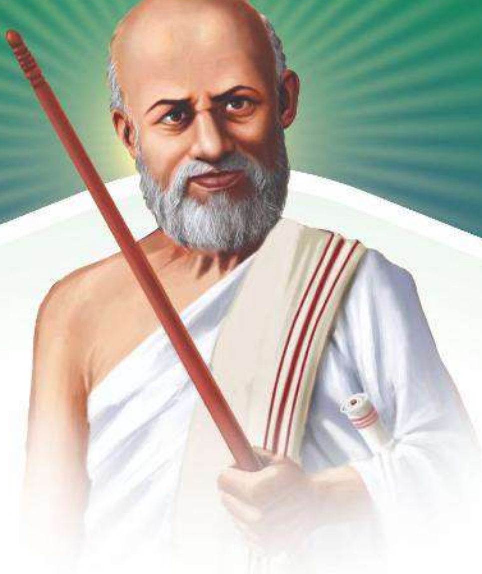

श्रुतसाहित्य को नष्ट होता देखकर... जिन के सदुपदेश से सूरत निवासी श्रेष्ठीवर्य गुलाबचंदजी देवचंदजी के द्वारा सेठ देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड की स्थापना हुई । इससे अतिरिक्त 'पच्चीस' और संस्थाएँ स्थापित हुई । जिसके कारण... आज तक स्थानकवासी-तेरापंथी-खरतरगच्छ-अचलगच्छ-पायचलगच्छ-तपागच्छ आदि अनेक संप्रदायो के हजारों श्रमण-श्रमणी भगवंत श्रुतग्रंथों को सरलता से प्राप्त कर अध्ययन कर रहे हैं ।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं...
पू. सागरजी म.

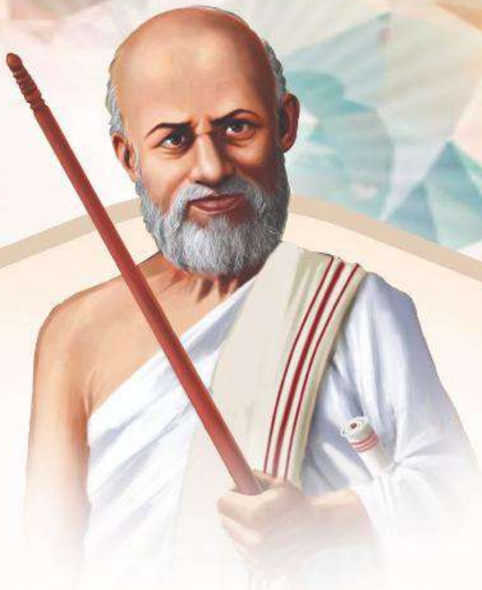

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी महाराजा

वीर निर्वाण की 25वीं शताब्दी
के मध्याह्न काल में जिन्होंने
सर्व प्रथम आगम लिप्यंतर
संशोधन एवं मुद्रण करवाने
का ऐतिहासिक कार्य किया।

9424898657 www.bandhubeldi.com Ayodhyapuram Tirth AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

जब अंग्रेज-अधिकारियों ने अपने तामसिक शौक एवं शिकार की सुविधा खातिर समेतशिखरजी तीर्थ में आवास बनाने की योजना बनाई तब मुंबई लालबाग में रहकर जिन्होंने अपनी विद्युत समान तेज वाणी से मुंबई के महाजनों के दिल में तीर्थ रक्षा की अलख जगाकर अंग्रेज वाईसरॉय को भी झुका दिया एवं उन्हें वह निर्णय वापिस लेने पर मजबूर होना पड़ा।

34

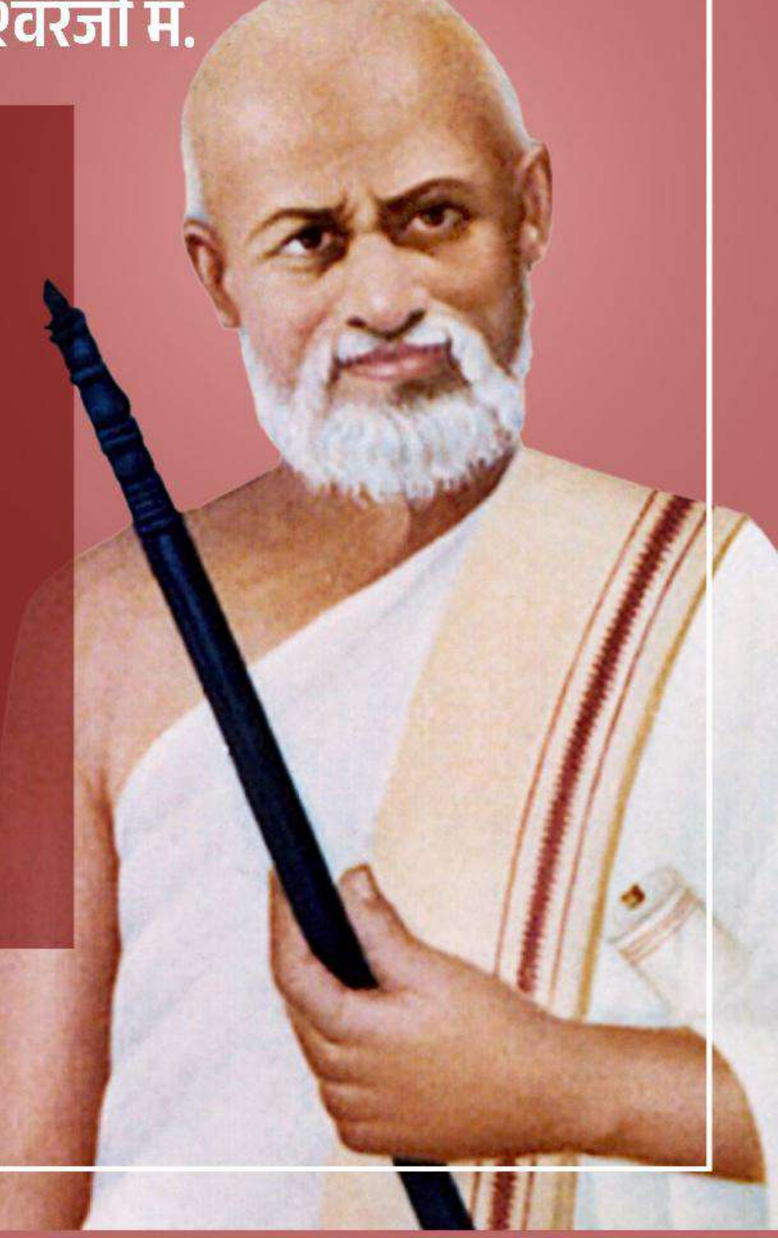

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

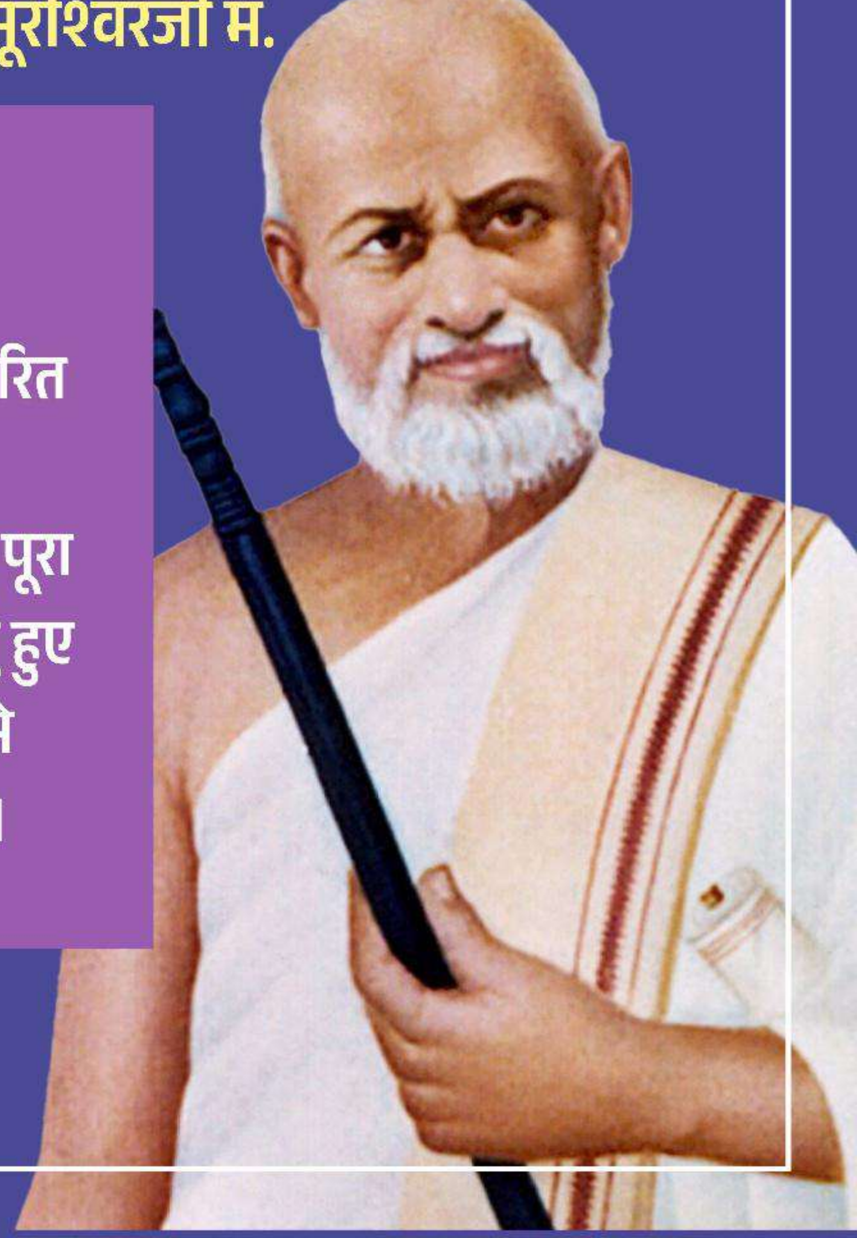

शिखरजी तीर्थ के सुरक्षित भविष्य को ध्यान रखते हुए अनेक संघ आगेवानों को प्रेरित करते हुए सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के हस्तक पूरा पहाड खरीदवाया... इस हेतु हुए फंड में भी अपने सदुपदेश से जबर्दस्त सहयोग करवाया।

35

9424898657

AYODHYAPURAM art 9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

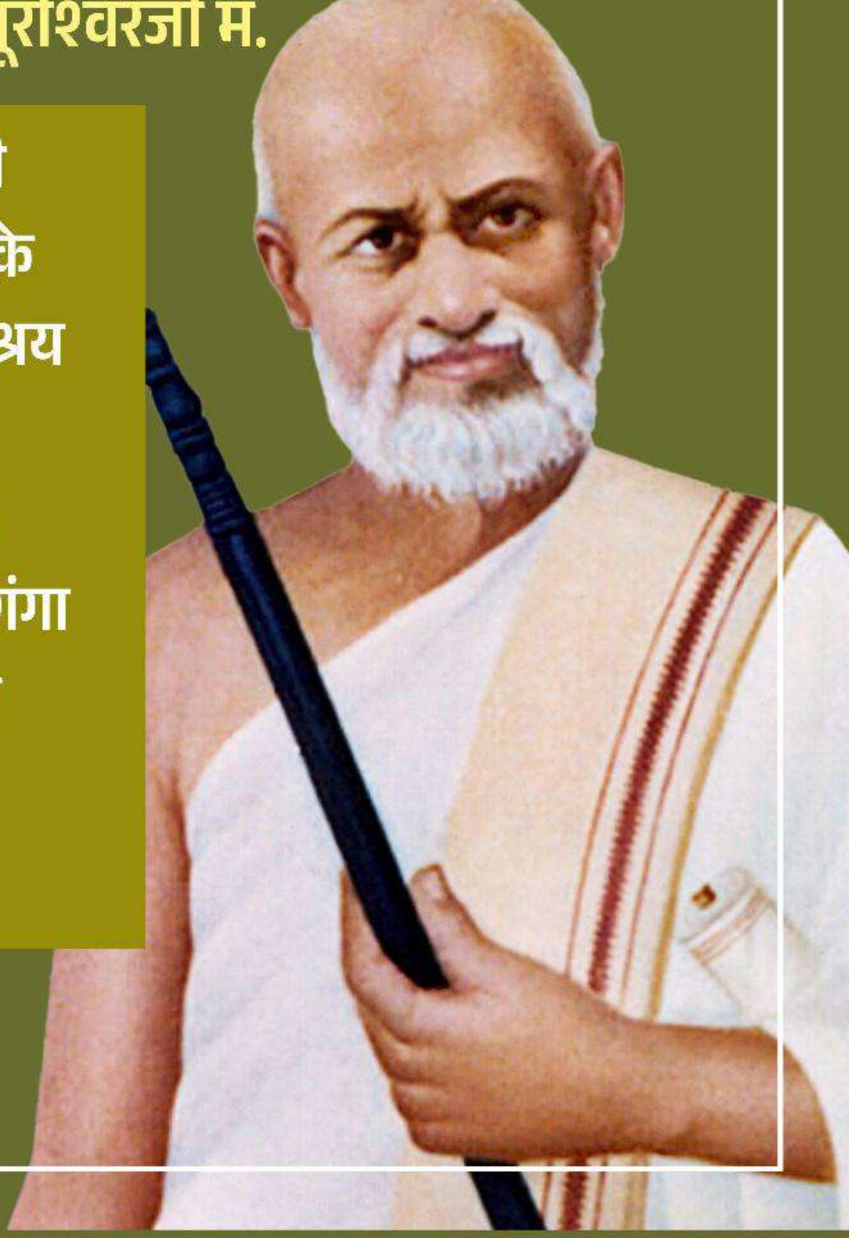

शासन, सिद्धांत और संघ की सुरक्षा संवर्धन के लिए जिनके द्वारा सूरत में अमरीबाई उपाश्रय के समीप जैन तत्वबोध पाठशाला नामक संस्था की स्थापना हुई। ज्ञान की इस गंगा में छोटे-बड़े, आबाल गोपाल सभी सुबह-शाम पधारकर स्नानकर पावन होने लगे।

36

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

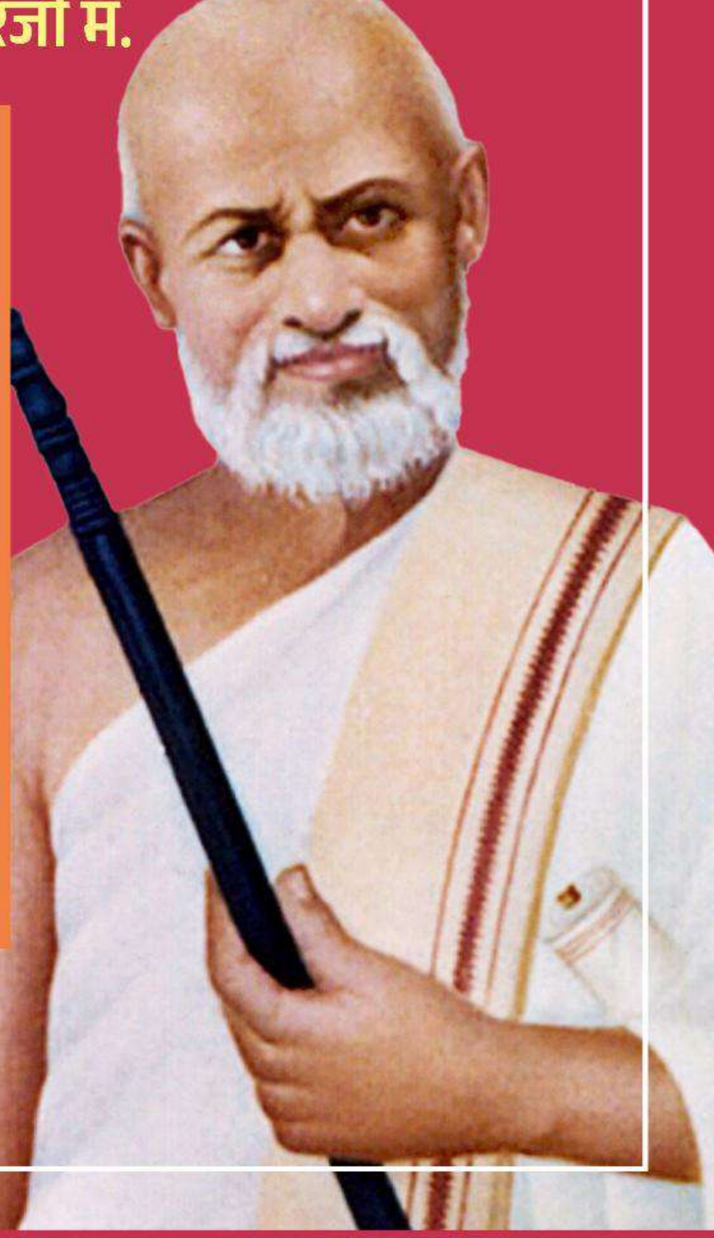

शासन विरोधी षड्यंत्र को निष्फल बनाने के लिए जिन्होंने अकेले ही सूरत की ओर विहार किया, परन्तु तब भी शासन की शान एवं अनुशासन... बरकरार रखने के लिए सूरत में अपना सामैया नही करवाया। एकल विहारी साधु का सम्मान इस तरह नहीं होता... यह राजमार्ग... ऐसा करके समझाया। फिर भी विनय हेतु पधारे हुए श्रावक-श्राविका का समूह साथ में आया। जब वे नेमूभाई की वाडी में पहुंचे तब संघपूजन हुआ, उसमें 2700 श्रीफल की प्रभावना हुई।

37

9424898657
AYODHYAPURAM art 9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

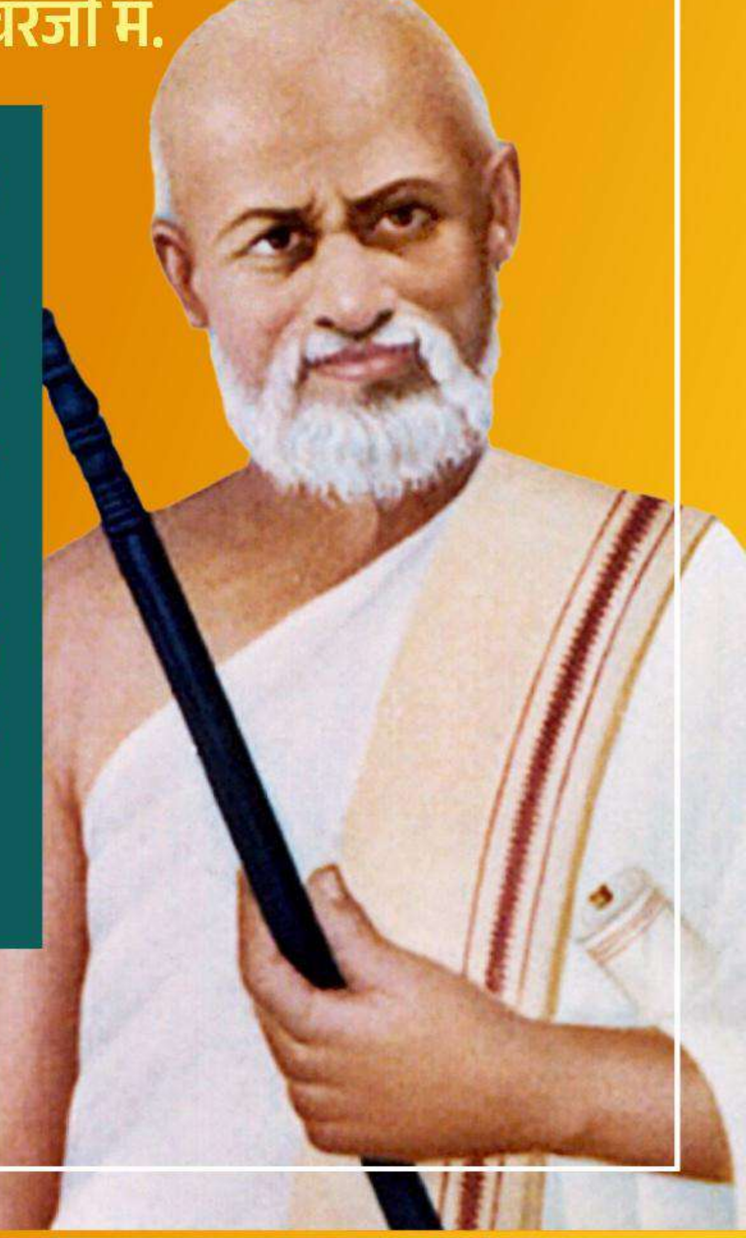

पाटण में जब अकाल राहत फंड की आवश्यकता महसूस हुई, तब जिन्होंने अपना चातुर्मास प्रवेश सामैया बिना वाद्य-यंत्र के करवाकर... अपने सादगी-वैभव का आदर्श जगत को दिया एवं श्रीसंघ की आंखे खोल उन्हें कर्तव्यों के प्रति जाग्रत किया।

9424898657
AYODHYAPURAM art 9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश

श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

जिनकी पावन प्रेरणा से उत्तर गुजरात के श्रावकों ने आगमोदय समिति की स्थापना की, वहीं भोंयणी में आगम-सेवा-संस्था भी स्थापित हुई।

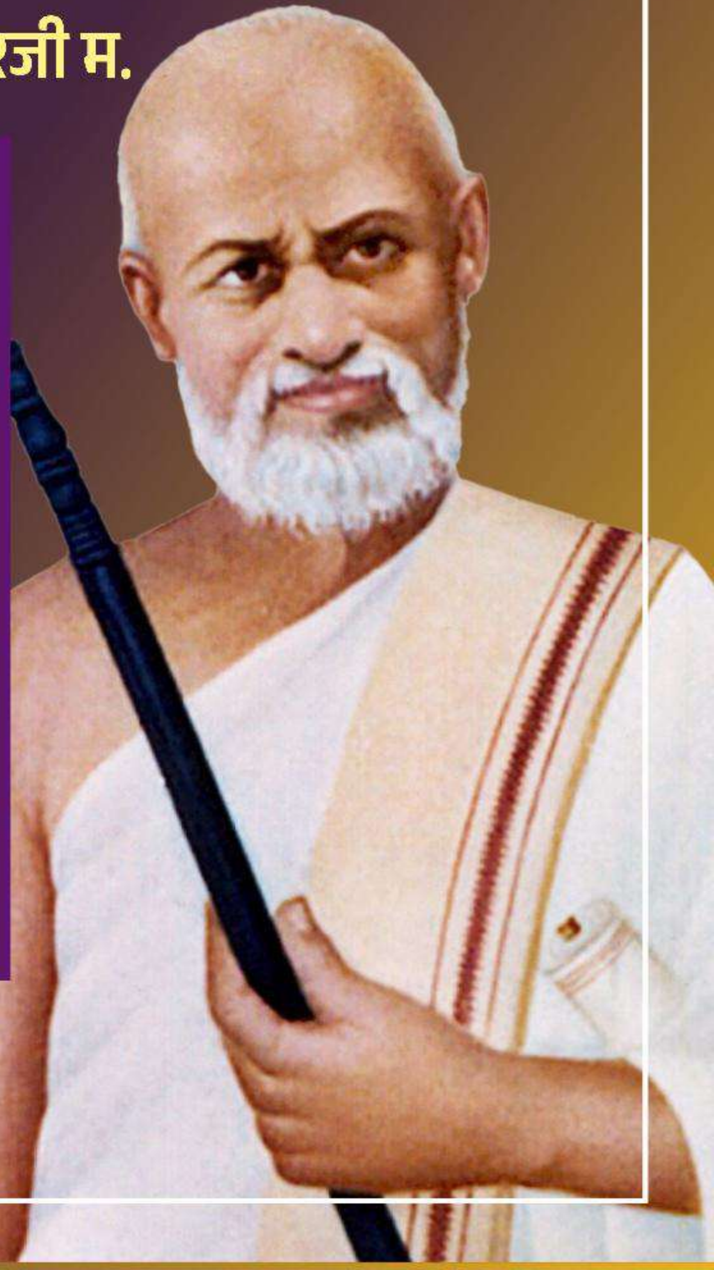

39

9424898657

AYODHYAPURAM art 9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth

मुखपाठ... आगमज्ञान की परंपरा विच्छिन्न होने पर 1500 साल बाद उसी इतिहास को ताजा करने लिए पाटण श्री संघ की विनंति से जिन्होंने सर्वप्रथम जो छ महिने तक चली। आगम वाचना सटीक दशवैकालिक सूत्र एवं षट्त्रिंशिका ग्रंथ पर दी।

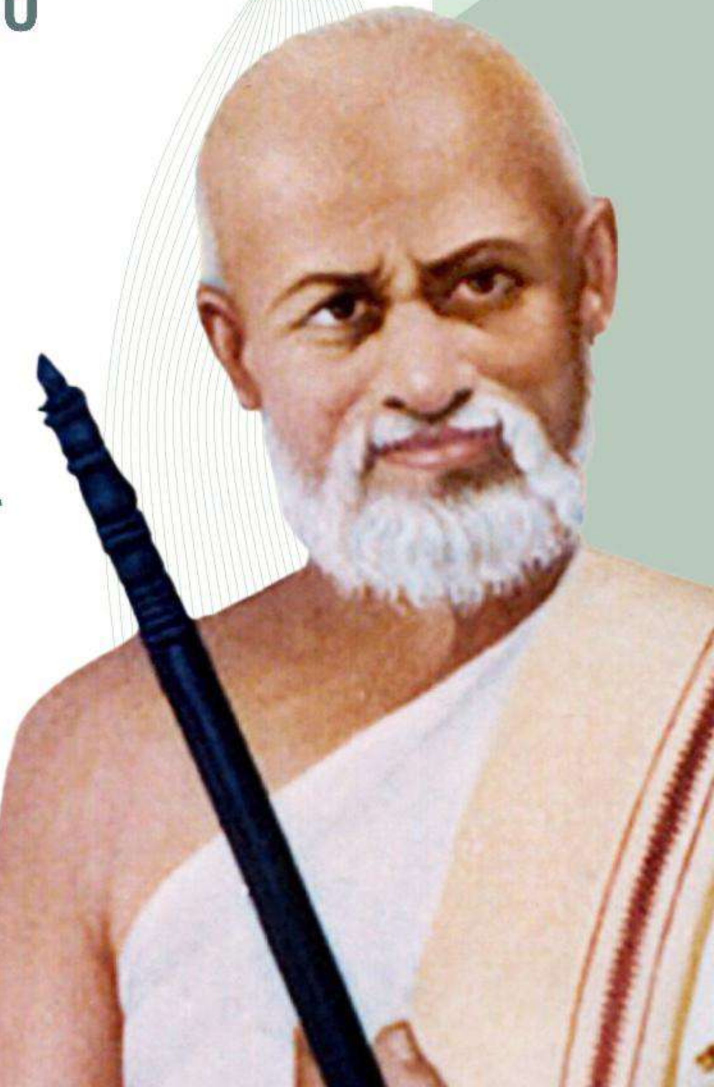

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657

मुंबई के परम सुश्रावक श्री चिमनभाई पटवा आराधक वर्ग में अग्रसर थे... वे कुंभार टुकडा आयंबिल खाता के प्रेरक थे तथा गोडीजी पौषध मंडल के स्थापक भी थे। संयम की तीव्र अभिलाषा होने पर भी कर्मवशात् धर्मपत्नी अति कर्कशा मिली थी। इसी कारण कोई भी पूज्यश्री, चिमनभाई को दीक्षा देने के लिए तैयार नहीं थे। उनके गोडीजी पौषध मंडल के सारे पौषार्थी आराधक, सर्व विरति धर्म के अनुरागी थे। उन सभी ने गोडीजी पार्श्व प्रभु के समक्ष नियम अंगीकार किया कि यदि चिमनभाई दीक्षा ले तो हम सभी को भी दीक्षा लेना। उनके दीक्षा दिन से जब तक हम सभी दीक्षा अंगीकार ना करें तब तक ६ विगई का त्याग।

(शेष कल)

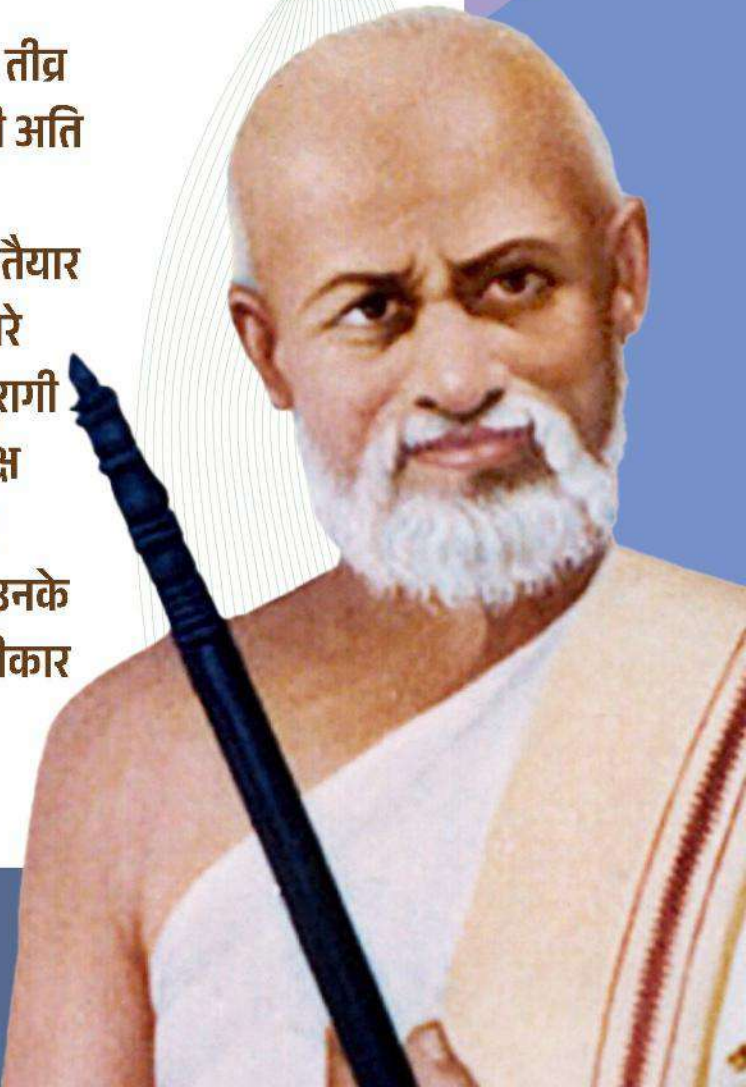

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art 9424898657

ऐसे हैं पू. सागरजी म.

आगमोद्धारक आचार्य देवेश
श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.

इस बीच, चिमनभाई के एक मित्र हीराचंद भाई की दीक्षा चरित्र नायक के पास हुई। उन्होंने अपनी अटल हिम्मत से चिमनभाई को भी संयम की भेंट दी और मुनिश्री चंद्रसागरजी नामकरण किया। उसी दिन से उनके नियमबद्ध 35 मित्रों ने ६ विगई का त्याग किया। वे सभी चन्द्रसागरजी के पास दीक्षा लेने को तैयार थे, मगर जिन्होंने अपनी दीर्घदृष्टि से सोचकर यह कहा कि भविष्य में शासन का कोई भी कार्य हो तो सभी समुदाय एक साथ साथ में बैठ सकें, इसलिए अलग-अलग समुदाय में दीक्षा लेंगे तो शासन को लाभदायी रहेगा।

(शेष कल)

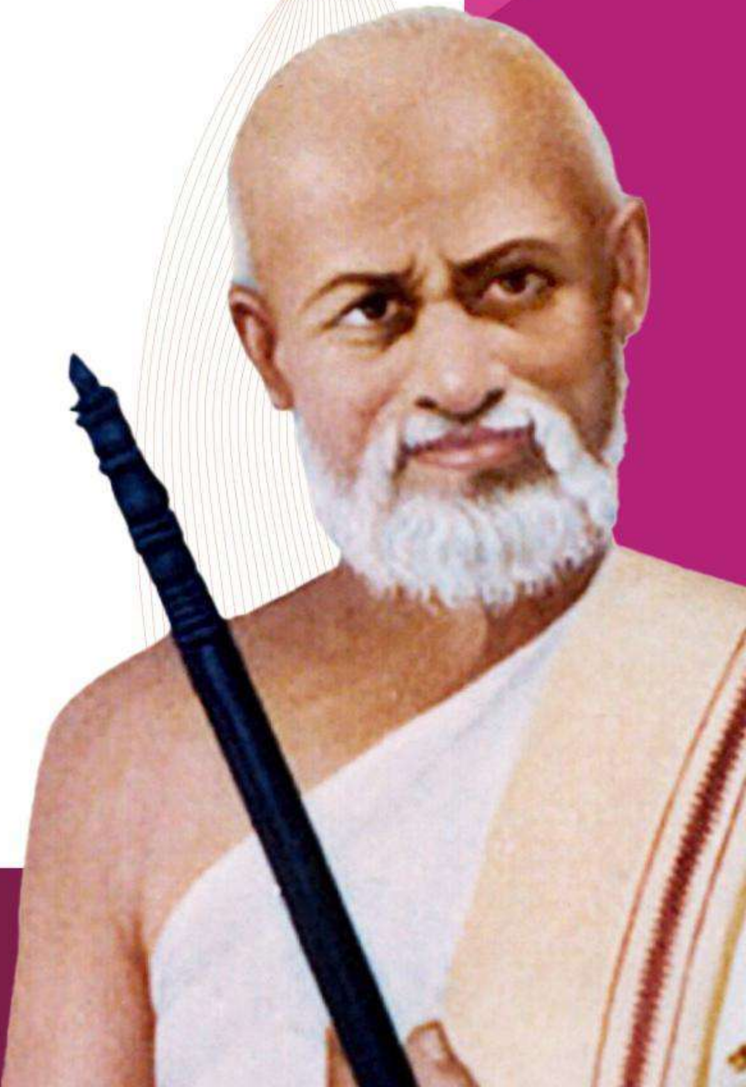

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657

फिर, एक के बाद एक 35 मुमुक्षुओं ने दीक्षा स्वीकार की। जिससे, पू.आ. हर्षसूरिजी म.सा. (पू. नीतिसूरिजी समुदाय), पू. महोपाध्याय श्री धर्मसागरजी म.सा., पू.पं. भद्रंकर विजयजी म.सा. (पू. रामचंद्रसूरि समुदाय), पू.आ. श्री देवेन्द्रसागरसूरिजी म.सा., पू.आ. श्री शांतिसूरिजी म.सा. (भाभरवाले) आदि अनेक धुरंधर पूज्यश्रीओं की भेंट जिनशासन को मिली अर्थात एक चिराग ने जिनशासन के अनेक समुदाय को रोशनी दी। एक साहस ने अनेक समुदाय को सिद्धि हासिल करवाई।

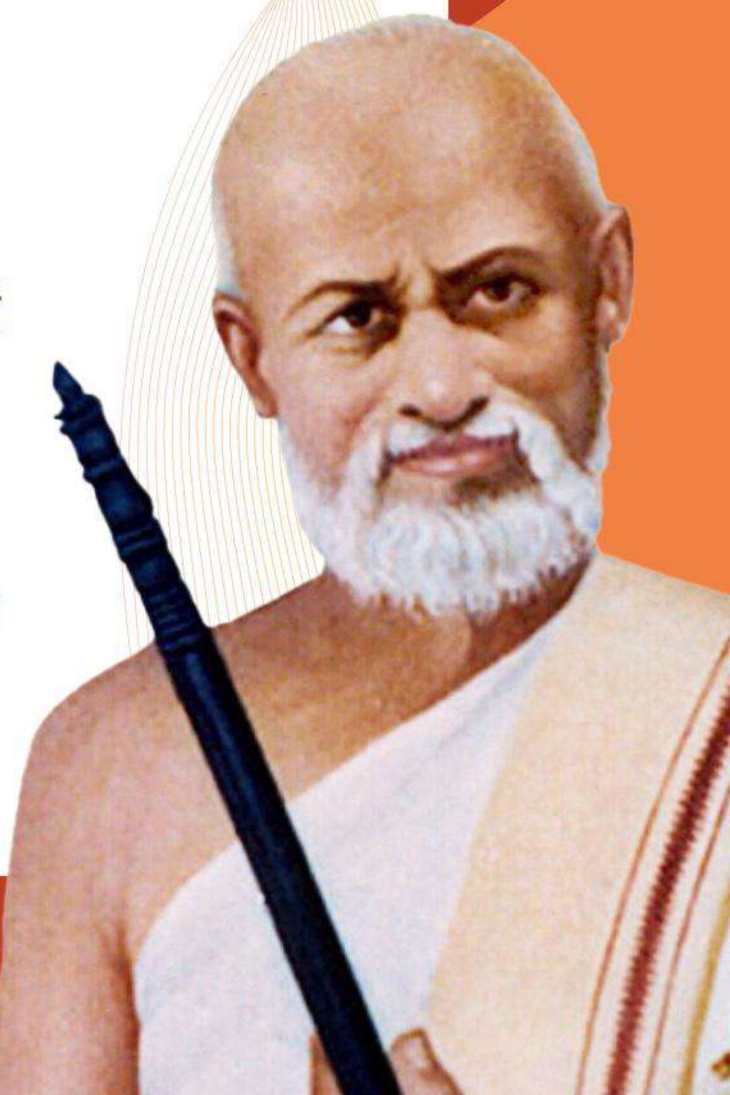

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657

पहले के समय में जब सागर-समुदाय को छोड़कर अन्य सभी समुदाय में श्रमणी-संपदा थी तब कपडवंज में जो दूसरी आगम-वाचना हुई जिसे सुनकर कई सारे साध्वीजी भगवंत स्वगुरु की आज्ञा से जिनके आज्ञानुवर्ती बने इस तरह जिनकी वाचनादि श्रवण से तपागच्छीय सागर शाखा में श्रमणीगण का आरंभ हुआ। आज वह संख्या 700 को पार कर गई है और सभी एक ही आज्ञा छत्र में है।

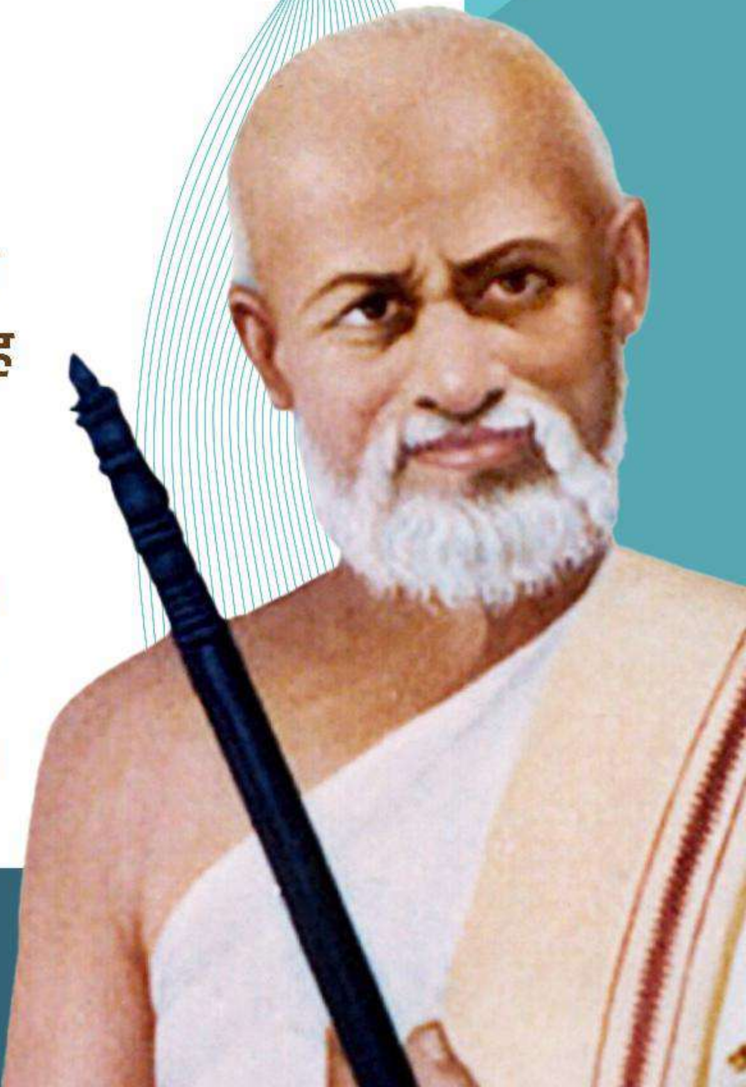

9424898657
AYODHYAPURAM art 9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

कपडगंज में जिनकी द्वितीय आगम-वाचना

- ललित-विस्तरा ग्रंथ
- योग दृष्टि समुच्चय
- अनुयोग द्वार-सटीक
- आवश्यक सूत्र-सटीक एवं
- उत्तराध्ययन सूत्र-सटीक
- आदि ग्रंथों पर हुई।

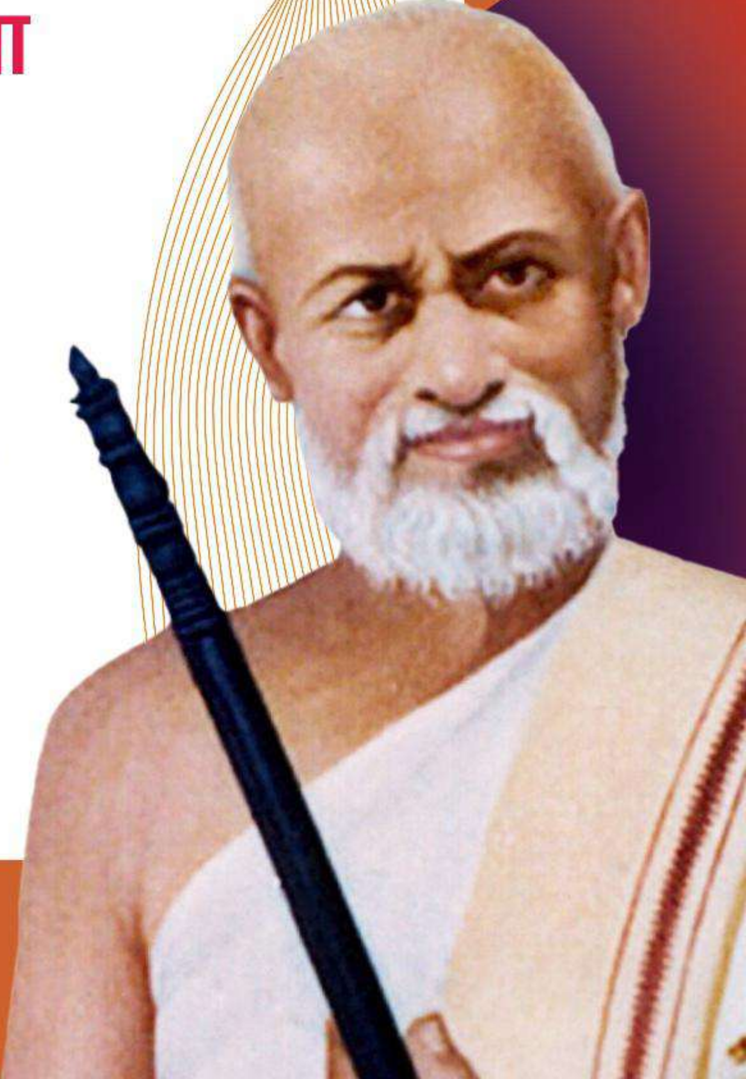

9424898657
www.bandhubeldi.com
ayodhyapuramtirth@gmail.com
ayodhyapuramtirth

AYODHYAPURAM art
9424898657